AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

जनजातीय गोदना कला का परिधान अलंकरण में अनुप्रयोग– छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में

ORIGINAL ARTICLE

Authors

डॉ. रमा बैनर्जी
अँग्रेजी साहित्य
अनुपम नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

डॉ. शिप्रा बैनर्जी
गृहविज्ञान विभाग
शासकीय दू. ब. महिला महाविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

गोदना कला शरीर पर गोदने का एक रूप है जिसका प्रयोग छत्तीसगढ़ की जनजातियों द्वारा अपने श्रृंगार के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। जनजातीय समाज में टैटू बनाना भारत की सदियों पुरानी परंपरा है। भारत में टैटू को गोदना के नाम से जाना जाता है। यह मुख्य रूप से आदिवासी जनजातियों में देखने को मिलता है। छत्तीसगढ़ के अबूझमारिया, बैगा, हिल कोरवा, भारिया और सहरिया जनजातियों में मुख्य रूप से यह देखने को मिलता है। विभिन्न प्रकार के टैटू पैटर्न पहचान चिन्हों के रूप में कार्य करते हैं जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से, एक जाति को दूसरे जाति समूह से और एक संस्कृति को दूसरे संस्कृति से अलग करते हैं। सरगुजा और रायगढ़ जिलों में रहने वाली उरांव जनजाति की महिलाएं अपने माथे पर तीन रेखाएं गुदवाती हैं। भील महिलाओं के दोनों आंखों के कोण पर विशिष्ट पक्षी जैसा टैटू होता है। यह उन्हें स्थाई रूप से लंबी पलकों वाला रूप आकार देता है। पक्षी और बिच्छू आकृति विशेष रूप से भील लोगों में पाई जाती है। बैगा जनजाति की महिलाओं में उनके माथे के केंद्र में भौंहों के बीच 'वी' आकृति का विशिष्ट टैटू होता है। टैटू के कुछ सामान्य और लोकप्रिय पैटर्न आदिवासियों की मुख्य पसंद है। वे फूल और ज्यामिति डिजाइन, घोड़े सवार के साथ हाथी, बिच्छू, मोर और आदिवासी मिथकों को चित्रित करते हैं। सामान्यतः लड़कियों को फूलों का टैटू, जबकि छोटी लड़कियों को चेहरे के विभिन्न स्थानों पर एकल बिंदु या माथे पर घोड़े की नाल जैसा अर्ध चक्र पसंद होता है। बुजुर्ग महिलाएं बिच्छू, हिरण,मोर तथा टखनों, हाथों और कंधों पर फूलों जैसे पैटर्न के टैटू पसंद करती हैं। गोदना कला को शारीरिक अलंकरण का एक आधुनिक तरीका माना जाता है। उनका मानना है कि शरीर पर गोदना कराने से व्यक्ति को समाज के लिए आकर्षक रूप से प्रस्तुत करना है। वर्तमान समय में यह गोदना कला मानव शरीर से हटकर कैनवास और वस्त्रों पर भी देखी जा रही है। गोदना कला का उपयोग परिधान अलंकरण में एक अद्वितीय तरीके से किया जा सकता है। यह आदिवासी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो महिलाओं के लिए गर्व और पहचान का प्रतीक है। इस कला को वस्त्रों पर प्रिंट, कढ़ाई या सिलाई के माध्यम से शामिल करके एक अनूठा रूप दिया जा सकता है।

मुख्य शब्द

आदिवासी संस्कृति, जनजातीय कला गोदना, महिला, जाति, हॉथ व मशीन कढ़ाई से निर्मित परिधान का अलंकरण.

परिचय

समकालीन भारतीय समाज में पूर्व ऐतिहासिक शैली कला टैटू को अपने लोकप्रिय परंपरा के रूप में जारी रखा है। छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले का देवार गोदना और सरगुजा जिले का गोदी गोदना, आज भी किया जाता है। सरगुजा के लखनपुर जिले में सफियानो बाई, रामकेली और बुद्ध कुंवर जैसी महिलाओं ने एक्रेलिक पेंट के साथ जंगल से लिये गए प्राकृतिक रंगों को मिलाकर पारंपरिक कपड़े पर बनाकर गोदी गोदना को पुनर्जीवित किया है। वर्तमान समय में महिलाएं अब टेबल मैट, नैपकिन, कुर्ते, साड़ियां, वॉल हैंगिंग और यहां तक की चादरें भी बनाती है। छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले की उमा देवी एक प्रसिद्ध देवार गोदना कलाकार है। आधुनिकीकरण ने गोदना कला और कलाकारों को काफी हद तक प्रभावित किया है। टैटू शरीर से कागज, कपड़े और कैनवास पर स्थानांतरित हो गए हैं। प्रदर्शन और कार्यशालाओं के माध्यम से भारत और विदेशों में गोदना चित्रकला के प्रसार में महिला टैटू कलाकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

गोदना कला की अवधारणाएं

यद्धपि राज्य के आदिवासी लोगों के बीच आभूषण काफी आम है लेकिन उनके आभूषणों की आध्यात्मिक अवधारणा भिन्न है। उनके विश्वास के अनुसार आभूषण नश्वर है क्योंकि वे मानव निर्मित है और इसलिए उन्होंनेगोदना कला या टैटू का आविष्कार किया जो स्थाई आभूषण है और शरीर पर हमेशा के लिए रहते हैं। उनका मानना है कि यह मृत्यु के बाद भी हमारे साथ रहते हैं। सरगुजा के अलावा गोदना कला की एक समृद्ध संस्कृति बस्तर क्षेत्र में भी देखी जा सकती है। यहां की शैली मधुबनी चित्रकला से काफी मिलती–जुलती है। यह जंगल से प्राप्त प्राकृतिक रंग का उपयोग करते हैं और इसे कपड़े पर अधिक स्थिर बनाने के लिए एक्रेलिक पेंट के साथ मिलाते हैं।

गोदना कला का परिचय

आदिवासी संस्कृति

गोदना कला जिसे टैटू कला भी कहा जाता है विभिन्न आदिवासी समुदायों में एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रथा है। गोदना शरीर पर टैटू बनाने की एक कला है जिसमें त्वचा में अखाद्य स्याही डाली जाती है। यह कला भारत में विभिन्न आदिवासी समुदाय द्वारा प्राचीन समय से प्रचलित है। इसे स्थाई आभूषण और सौंदर्यीकरण के रूप में तैयार किया जाता है जिसके बारे में माना जाता है कि यह मृत्यु से परे हैं। गोदना के निशान 200 ईसा पूर्व के हैं। गोदना शब्द देवनागरी का एक रूप है जिसका अर्थ है लिखना या चित्रित करना। गोदना कला का अभ्यास करने वाले प्रत्येक समुदाय के पास रूपांकनों और शरीर के विभिन्न अंगों के लिए अपने स्वयं के डिजाइन होते हैं जो विभिन्न सौंदर्य मूल्यों को दर्शाते हैं। शरीर के अलावा विवाह और त्योहार जैसे विशेष अवसर पर दीवारों और फर्श पर भी इसी तरह के रूपांकर देखे जाते हैं। गोदना गोंड समुदाय का एक महत्वपूर्ण पहलू है और इसे उनके जीवन के सभी क्षेत्रों में देखा जा सकता है जिसमें उनके पारंपरिक और आजीविका प्रथाएं शामिल है। गोंडों के लिए गोदना दो मुख्य उद्देश्य पूरा करते हैं:

- **पहला:** यह आभूषण के एक रूप का प्रतीक है जिसे शरीर पर अंकित करने से मृत्यु को पार करने वाला कहा जाता है। यह एक आदिवासी संस्कृति पर प्रकाश डालता है जो धन और सुंदरता की भौतिकवादी और सांसारिक धारणाओं से खुद को अलग रखती है।
- **दूसरा:** गोदना उन सभी विकासात्मक मील के पत्थरों का भी प्रतिनिधित्व करता है जिससे समुदाय में एक महिला गुजरती है जिसमें शारीरिक और सांस्कृतिक मील के पत्थर शामिल हैं। यह समुदाय में कई प्रथाओं के लिए एक शर्त है जिसमें विवाह सबसे महत्वपूर्ण है। शादी तय होने से पहले लड़की से उसके शरीर पर गोदना होने की उम्मीद की जाती है। अंत में गोदना को सांस्कृतिक रूप सौभाग्य का अग्रदूत माना जाता है। गोदना जनजातीय लोगों के धर्म, विश्वास प्रणाली, शरीर की सजावट, स्वास्थ्य देखभाल, प्रथाओं, सामाजिक स्थिति और धन से संबंधित है।

पारंपरिक महत्व

गोदना विभिन्न आकृतियों और डिजाइनों के माध्यम से सामाजिक पहचान, धार्मिक विश्वासों और जीवन के संस्कारों का प्रतीक है। गोदना सामाजिक पहचान के साथ–साथ शारीरिक सजावट का भी एक रूप है। यह हमारे जीवन के संस्कारों का भी संकेत देते हैं। इस तरह से इनका पारंपरिक महत्व देखा जाता है।

सौंदर्य और सजावट

इसे शरीर पर एक स्थाई आभूषण और सौंदर्यीकरण के रूप में भी देखा जाता है। शरीर को सुंदर व सजावटी रूप प्रदान करने में इनका विशेष महत्वपूर्ण स्थान होता है। जनजातीय समाज में सामाजिक स्वीकृति के लिए भी इनका उपयोग होता है।

परिधान अलंकरण में गोदना कला का उपयोग

- **वस्त्रों पर प्रिंटः** गोदना डिजाइन को कपड़े पर प्रिंट करके एक आकर्षक और आधुनिक रूप दिया जा सकता है।
- **कढ़ाईः** गोदना कला को वस्त्रों पर कढ़ाई के माध्यम से शामिल करके एक जटिल और कलात्मक रूप दिया जा सकता है।
- **सिलाईः** गोदना आकृतियों को कपड़े पर सिलाई करके भी एक अनोखा लुक दिया जा सकता है।
- **अन्य माध्यमः** गोदना कला को बैग, आभूषण और अन्य सामानों पर भी इस्तेमाल किया जा सकता है, उदाहरण के तौर पर बैगा जनजाति की महिलाओं द्वारा बनाए गए गोदना कला को वस्त्रों को प्रिंट करके या कढ़ाई करके शामिल किया जा सकता है। गोंड जनजाति की पारंपरिक गोदना डिजाइनों को वस्त्र पर प्रिंट करके या सिलाई करके उपयोग किया जा सकता है। रामनामी पंथ के गोदना डिजाइन को वस्त्रों पर प्रिंट करके या कढ़ाई करके शामिल किया जा सकता है।

मनुष्य द्वारा निर्मित वस्तु किसी न किसी अन्य वस्तु या आसपास के वातावरण से प्रेरणा लेकर बनाई जाती है। वस्त्र निर्माण के क्षेत्र में टेक्सटाइल डिजाइनर या फैशन डिजाइनर अपने वस्त्र एवं परिधानों को सुंदर और आकर्षक बनाने के लिए जिन नमूनों का प्रयोग करते हैं वे नमूने भी आसपास से प्रेरणा लेकर बनाए जाते है। परिधान की सतह को अलंकृत करने के लिए विभिन्न तकनीक का उपयोग किया जाता है जैसे पेंटिंग, प्रिंटिंग, कढ़ाई आदि। किसी भी डिजाइन के प्रेरणा स्रोत भिन्न–भिन्न हो सकते हैं जैसे– लोककलाएं, प्रकृति, धर्म, साहित्य, ऐतिहासिक इमारतें, लोकशिल्प, पारंपरिक कलाएं, ऐतिहासिक कलाएं, आध्यात्म या स्थापत्य कलाएं आदि। इस अध्ययन में हम छत्तीसगढ़ की पारंपरिक गोदना कला से प्रेरित नमूनों के द्वारा परिधानों के अलंकरण के विषय में जानकारी का अध्ययन कर रहे हैं।

इतिहास

विभिन्न संस्कृतियों के इतिहास में टैटू या गोदना का उल्लेख पाया जाता है। पिछली कई शताब्दियों से मानव अपने शरीर पर टैटू बनवाते आ रहे हैं। 6000 BCE से गोदना का उल्लेख प्राप्त हुआ है। फ्रांस व पुर्तगाल की गुफा में टैटू के साथ मानव की आकृतियां दिखाई देती हैं। सबसे प्राचीन मानव शरीर जिसमें टैटू पाया गया वह आइसमैन का है जो कि लगभग 5300 वर्ष पुराना है जिसे नॉर्थ इटली के पहाड़ों पर खोजा गया है। पुरातात्विक साक्ष्य के अनुसार टैटू या गोदना आज की खोज नहीं है बल्कि हजारों वर्ष पूर्व से मनुष्य इस कला को जानता रहा है।

छत्तीसगढ़ में गोदना से संबंधित जनजातियों के तथ्य

जनजातियों के जीवन में गोदना का एक महत्वपूर्ण स्थान है। वनवासियों का प्रमुख श्रृंगार गोदना है। यह वह अलंकरण है जिसके बिना आदिवासी महिला का जीवन अपूर्ण माना जाता है। बैगा जनजाति सबसे गोदना प्रिय जनजाति है। बस्तर अंचल में जनजातीय स्त्रियां 5 से 12 वर्ष की आयु तक गोदना बनवाते हैं। यहां गोदना एक लोक संस्कार है, इनका मानना है कि किसी महिला ने गोदना श्रृंगार नहीं किया तो मृत्यु उपरांत उसे यमलोक में अधिक कष्ट प्राप्त होगा। बस्तर में कंजर, बंजारा और देवार जाति के लोग गोदना गोदने का कार्य करते हैं।

अबूझमाड़ क्षेत्र में युवतियाँ आड़ी रेखाओं की लकीरों से, गोल–गोल बिंदुओं से चेहरे को सजाती हैं। कांकेर ने प्रायः खाड़ू, पैड़ी, बांहचिहा, बिच्छी, छाती पर सूता, कोहनी में मक्खी आदि गुदवाते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से गोदना के कारण स्त्रियों को गठिया रोग नहीं होता। गोदना का हरा रंग प्रकृति की हरियाली से साम्य रखता है। कमार स्त्रियाँ अपने कंधे पर मोर, हाथ के ऊपर बिच्छू, उंगलियों पर बिंदुओं से मक्खी का आकार बनवाती हैं। पहाड़ी कोरवा की स्त्रियां शरीर पर जहां पर आभूषण पहने जाते हैं वहां पर गोदना बनवाती हैं।

अध्ययन की पष्ठभूमि

यह अध्ययन छत्तीसगढ़ में निवास करने वाली जनजातियों द्वारा बनाए जाने वाले गोदना के नमूनों का भारतीय परिधान में अनुप्रयोग व उसके प्रति महाविद्यालयीन छात्राओं की प्रतिक्रिया एवं रुझान पर आधारित है। छत्तीसगढ़ के उत्तरी क्षेत्र में सरगुजा जिले के गोंड जनजाति द्वारा बनाए जाने वाले नमूनों को शामिल किया गया है। उन नमूनों में से नमूने चुनकर उन्हें विभिन्न अलंकरण तकनीकों में से एक मशीन कढ़ाई एवं हस्त कढ़ाई के माध्यम से रुमाल व विभिन्न भारतीय परिधानों पर बनाया गया है। अध्ययन में जनजाति गोदना कला के नमूनों से अलंकृत परिधानों के प्रति रायपुर नगर के महाविद्यालयीन छात्राओं के रुझान, पसंद व प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य

1 छत्तीसगढ़ की जनजातीय गोदना कला के नमूनों को एकत्रित कर उनका अध्ययन करना।
2 जनजातीय गोदना कला के नमूनें वाले परिधानों के प्रति महाविद्यालयीन छात्राओं के रुझान व उनकी पसंद का अध्ययन करना।
3 मशीन एवं हैंड एंब्रायडरी द्वारा बनाए गए जनजातीय गोदना के नमूनों के प्रति महाविद्यालयीन छात्राओं के रुझान, पसंद व प्रतिक्रिया का अध्ययन करना।

परिकल्पना

H_1 छत्तीसगढ़ के जनजातीय कला गोदना के नमूनों के बारे में छात्राओं को पर्याप्त जानकारी होगी।

H_{01} जनजातीय गोदना के नमूने वाले परिधान के प्रति छात्राओं के रुझान व पसंद में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_{02} मशीन एवं हैंड एंब्रॉयडरी वाले नमूनों के प्रतिछात्रों के रुझान व पसंद में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन की सीमाएं

- इस अध्ययन में छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले के जनजातीय गोदना के नमूनों को ही शामिल किया गया है।
- गोदना के नमूनों का अनुप्रयोग मशीन एवं हाथ एंब्रॉयडरी द्वारा ही वस्त्र पर किया गया है।
- गोदना के नमूनों का अनुप्रयोग भारतीय व आधुनिक परिधान पर किया गया है।
- सर्वेक्षण हेतु रायपुर नगर के महाविद्यालयीन छात्राओं को शामिल किया गया है।

अनुसंधान की पद्धति एवं प्रतिमान

शोध प्रविधि की व्याख्या में सर्वप्रथम हमने शोध कार्य को निम्न भागों में बांटा हैः

- गोदना नमूनो का संकलन एवं चयन।
- गोदना के नमूनों द्वारा रुमाल एवं परिधान के सैम्पल का निर्माण।
- शोध कार्य पर आधारित सर्वेक्षण।
- प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण।

प्रस्तुत शोध की अनुसंधान प्रविधि एवं प्रतिमान

- शोध अभिकल्प।
- क्षेत्र का चुनाव।
- न्यादर्श का चयन एवं आकार।
- उपकरण एवं साधन।
- सैंपल एवं परिधान निर्माण।
- तथ्यों का संकलन।
- सांख्यिकी विश्लेषण।

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य गोदना आकृतियों का वस्त्रों में प्रयोग कर उनके प्रति महाविद्यालयीन छात्राओं के रुझान, पसंदगी व प्रतिक्रिया का अध्ययन करना है। गोदना के नमूनों का संकलन करने हेतु उनके कार्य स्थल व उनके निवास स्थान पर जाकर किया गया एवं गोदना के नमूनों का फोटोग्राफ लेकर संकलन किया गया तथा प्रत्येक नमूने के बारे में गोदना कलाकारों से जानकारी ली गई। इसके लिए निरीक्षण तकनीक का उपयोग किया गया एवं कलाकार द्वारा दी गई जानकारी को नोट किया गया। कलाकारों की प्राथमिकता के अनुसार शोध कार्य हेतु नमूनो को चयनित कर शोध कार्य किया गया। इन सब कार्य हेतु विवरणात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया।

क्षेत्र का चुनाव

किसी भी शोध कार्य में समस्या को ध्यान में रखते हुए ही क्षेत्र का चुनाव करना होता है। इस अध्ययन में एक ओर गोंड जनजाति में प्रचलित गोदना के नमूनों का संगठन करना था तथा दूसरी ओर उन नमूनों के प्रयोग से परिधान निर्माण कर उन पर आधारित सर्वेक्षण करना था। अतः शोध के उद्देश्य अनुसार इस अध्ययन में क्षेत्र के चुनाव को दो भागों में बांटा गया है:

- गोदना नमूनों के संकलन हेतु क्षेत्र का चुनाव
- सर्वेक्षण कार्य हेतु क्षेत्र का चुनाव

गोदना नमूनों के संकलन हेतु क्षेत्र का चुनाव

प्रस्तुत शोध में गोंड जनजाति में प्रचलित गोदना नमूनो का संकलन किया गया है। छत्तीसगढ़ राज्य में बहुत सी जनजातियाँ निवासरत है। सभी जनजातियों में विभिन्न प्रकार के लोक कलाएं व लोक शिल्प विद्यमान है जिनमें से गोदना कला भी एक है। छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा, जशपुर व बस्तर जैसे कुछ सीमित क्षेत्र के कलाकार अपनी इस कला को कैनवास व वस्त्रों पर भी उकेर रहे हैं। अतः हमने इस अध्ययन हेतु गोंड जनजाति में प्रचलित गोदना के नमूनों का संकलन छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिले से किया है।

सर्वेक्षण कार्य हेतु क्षेत्र का चुनाव

सर्वेक्षण हेतु रायपुर नगर का चुनाव किया गया है। रायपुर नगर में चार विधानसभा क्षेत्र हैं। रायपुर शहर को 10 जोन व 70 वार्डों में वर्गीकृत किया गया है। यहां सभी सामाजिक–आर्थिक स्तर के परिवार निवासरत हैं।

सर्वेक्षण हेतु न्यादर्श का चयन व आकार

वर्तमान शोध कार्य के सर्वेक्षण कार्य में संभाव्यता यादृच्छिक न्यादर्श चयन पद्धति द्वारा न्यादर्शों का चयन किया गया, क्योंकि वर्तमान शोध कार्य में विभिन्न वर्गों की केवल छात्राओं का ही सर्वेक्षण हेतु चयन करना था। सर्वेक्षण हेतु कुल 100 न्यादर्श का चयन किया गया जिनमें स्नातक (75) और स्नातकोत्तर (75) स्तर पर छात्राओं को वर्गीकृत किया गया।

उपकरण एवं साधन

- नमूनो के संकलन हेतु अध्ययन क्षेत्र का भ्रमण कर जनजातियों के निवास स्थान मेंजाकर उसका संकलन किया गया।
- अवलोकन प्रविधि प्राथमिक सामग्री के संग्रहण की प्रत्यक्ष प्रविधि है। सरगुजा जिले के जनजाति क्षेत्र में गोदना से संबंधित अवलोकन किया गया।
- प्रस्तुत अध्ययन में गोदना के नमूनों का प्रयोग वस्त्र पर करना था अतः उन नमूनों के संकलन के लिए उनके फोटोग्राफ लिए गए।
- व्यक्तिगत साक्षात्कार के द्वारा गोदना नमूनो के विवरण का संकलन किया गया।
- उत्तरदाताओं से तथ्यों के संकलन हेतु प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।
- अपने न्यादर्शों का चयन विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के वर्गों से किया गया है जिसके लिए कुप्पु स्वामी सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी का उपयोग किया गया।
- आंकड़ों का संकलन तथा गोदना नमूना द्वारा बनाए गए सैंपल रुमाल और परिधान पर उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं के संकलन के लिए सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया।
- संकलित तथ्यों के सारणीयन एवं अन्य लिखित कार्यों के लिए एम.एस.ऑफिस के सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया गया है।
- कोरल ड्रॉ का प्रयोग कर गोदना के नमूनो का ग्राफिकल रूपांतरण किया गया है।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

सारणी क्रमांक 1: उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत जानकारी–महिला उत्तरदाताओं की आयु संरचना के आधार पर वर्गीकरण दर्शाया गया है

क्र.	आयु वर्ग	संख्या	प्रतिशत
1	17–19	30	30 प्रतिशत
2	19–21	25	25 प्रतिशत
3	21–23	20	20 प्रतिशत
4	23–25	25	25 प्रतिशत

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

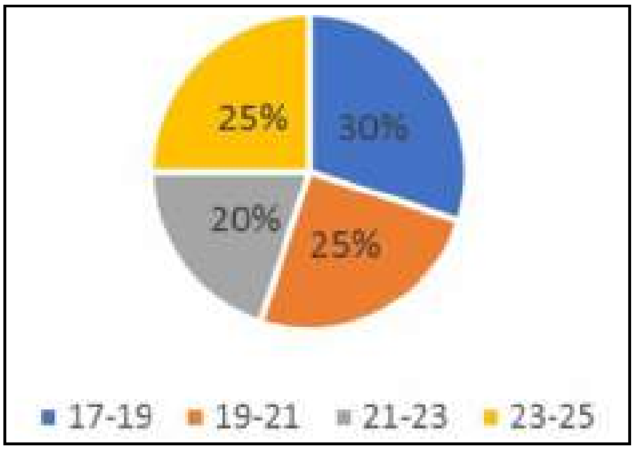

सारणी क्रमांक 2: शिक्षा के स्तर के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र.	शिक्षा	संख्या	प्रतिशत
1	स्नातक	55	55 प्रतिशत
2	स्नातकोत्तर	45	45 प्रतिशत

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

सारणी क्रमांक 3: क्या आप गोदना शब्द से परिचित है?

क्र.	गोदना शब्द से परिचित है	स्नातक छात्राएँ	स्नातकोत्तर छात्राएँ	कुल
1	हाँ	41	41	82
2	नहीं	10	08	18

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

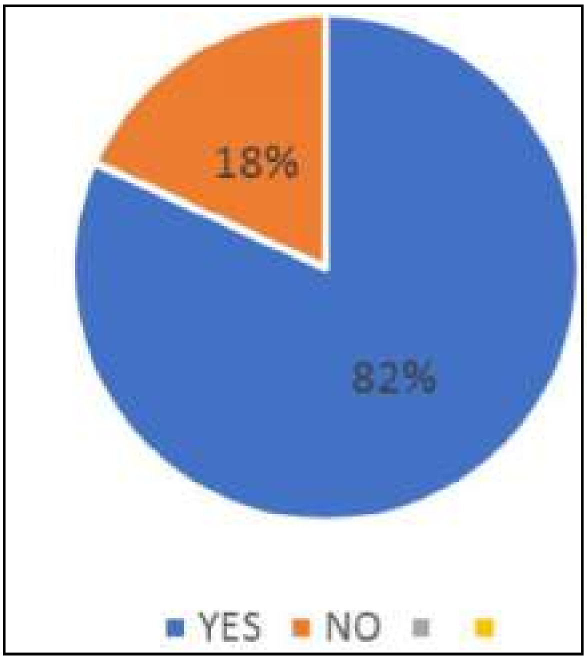

सारणी क्रमांक 4: आपको गोदना के बारे में जानकारी कहां से प्राप्त हुई।

क्र.	आपको गोदना के बारे में जानकारी कहां से प्राप्त हुई	स्नातक स्तर	स्नातकोत्तर स्तर	कुल
1	इंटरनेट/सोशल मीडिया	45	40	85
2	प्रदर्शनी	07	02	09
3	परिवार से	02	02	04
4	दोस्तों से	01	01	02
	कुल	55	45	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

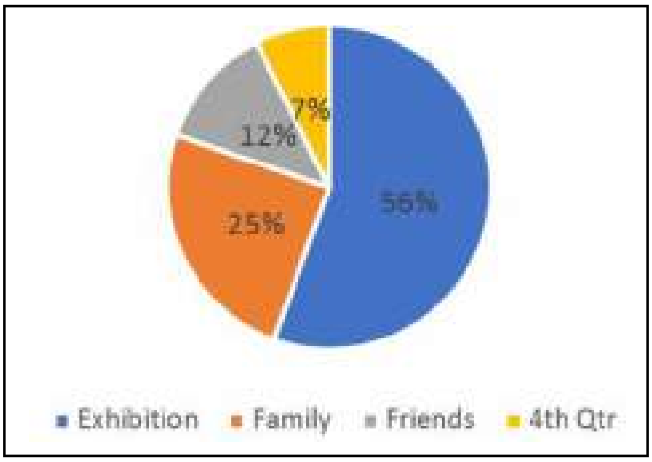

सारणी क्रमांक 5: आपके अनुसार गोदना शिल्प किस तरह के परिधान हेतु उपयुक्त है

क्र	अनुसार गोदना शिल्प किस तरह के परिधान हेतु उपयुक्त है	स्नातक स्तर	स्नातकोत्तर स्तर	कुल
1	साड़ी	25	25	50
2	सलवार सूट/कुर्ती	15	10	25
3	दुपट्टा/शॉल	05	03	08
4	आधुनिक परिधान	10	07	17

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

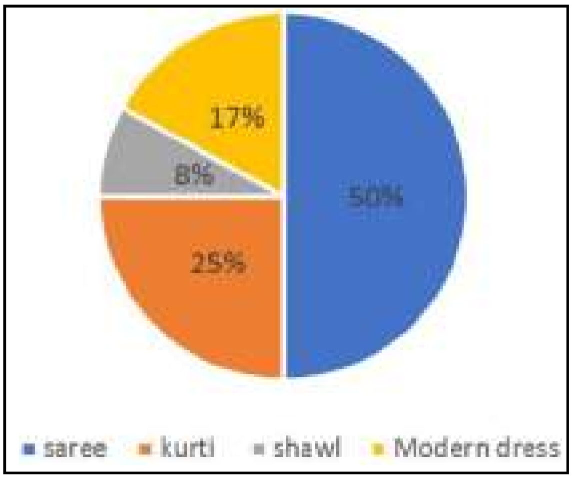

सारणी क्रमांक 6: विभिन्न गोदना मोटिफ का प्रयोग करके मशीन एंब्रायडरी से बने परिधानों के बारे में उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

क्र.	प्रतिक्रिया	स्नातक स्तर	स्नातकोत्तर स्तर	कुल
1	खराब	0	0	0
2	औसत	05	03	8
3	अच्छे	15	10	25
4	बहुत अच्छे	35	32	67

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

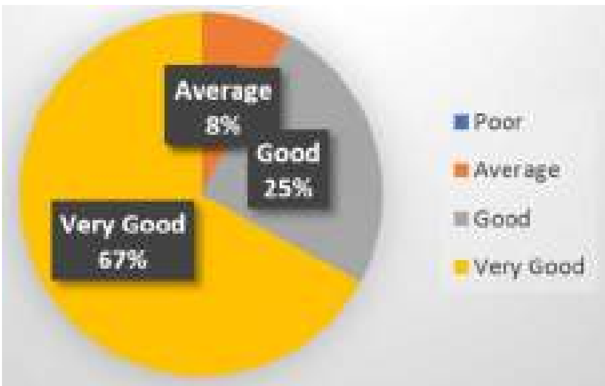

सारणी क्रमांक 7: विभिन्न गोदना मोटिफ का प्रयोग करके हाथ एंब्रायडरी से बने परिधानों के बारे में उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

क्र.	प्रतिक्रिया	स्नातक स्तर	स्नातकोत्तर स्तर	कुल
1	खराब	0	0	0
2	औसत	04	04	08
3	अच्छे	15	07	22
4	बहुत अच्छे	36	34	70

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

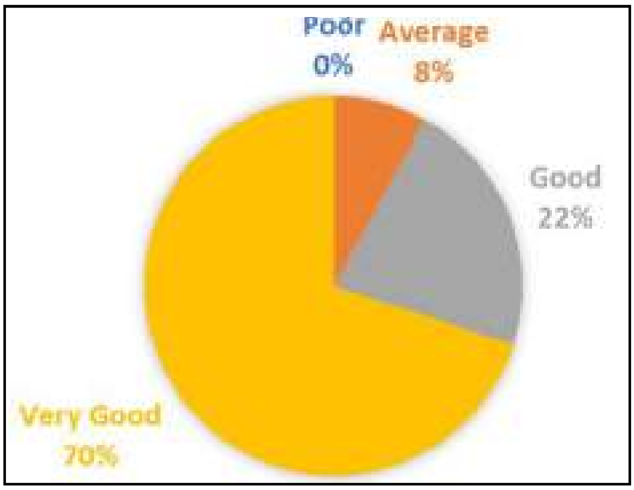

विश्लेषण

- इस अध्ययन में यह पाया गया कि 8 प्रतिशत छात्राएं गोदना शब्द से परिचित थी और 18 प्रतिशत छात्राएँ गोदना शब्द से परिचित नहीं थी।
- 85 प्रतिशत छात्राओं को गोदना शिल्प से संबंधित जानकारी इंटरनेट और सोशल मीडिया सेप्राप्त हुई जबकि 09 प्रतिशत को प्रदर्शनी, 04 प्रतिशत को परिवार के लोगों से और 02 प्रतिशत छात्राओं को दोस्तों से जानकारी हुई।
- 50 प्रतिशत छात्राओं का यह मानना है गोदना मोटिफ या नमूने साड़ी पर अच्छे लगते हैं, 25 प्रतिशत ने सलवार और कुर्ती को कहा, 08 प्रतिशत छात्राओं का कहना है कि दुपट्टे व शॉल जबकि 17 प्रतिशत छात्राओं ने कहा कि गोदना मोटिफ से बने आधुनिक परिधान दिखने में सुंदर और आकर्षक लगते हैं।
- विभिन्न गोदना मोटिफ का प्रयोग कर मशीन एंब्रॉयडरी से बने परिधानों को 67 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अच्छा कहा, 25 प्रतिशत ने अच्छा और 08 प्रतिशत ने औसत कहा।
- इसी तरह विभिन्न गोदना मोटिफ का प्रयोग कर मशीन एंब्रॉयडरी से बने परिधानों को 70 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अच्छे की श्रेणी में रखा, 22 प्रतिशत ने अच्छे और 08 प्रतिशत ने औसत कहा।

निष्कर्ष

यह अध्ययन गोदना नमूनों के वस्त्रों में अनुप्रयोग पर आधारित है। गोदना कला को परिधान अलंकरण में शामिल करके हम अपने संस्कृति को संरक्षित कर सकते हैं और आधुनिक फैशन में एक अनूठा रूप दे सकते हैं। यह कला हमारे वस्त्रों को एक विशेष पहचान देती है और हमारे सांस्कृतिक गौरव को प्रदर्शित करती है। अध्ययन में यह देखा गया कि शोध कार्य के लिए गोदना कला पर आधारित परिधानों को छात्राओं ने न केवल पसंद किया बल्कि फैशन के अनुरूप भी माना और कहा कि गोदना कला से निर्मित परिधान पहनने योग्य है। इससे गोदना शिल्प को बढ़ावा मिलेगा और गोदना मोटिफ से बने परिधान भी सामने आएंगे जो कि न केवल जनजातीय लोगों को आर्थिक संबल प्रदान करेगा अपितु इस पारंपरिक कला का संरक्षण भी होगा। भविष्य में ऐसे ही अन्य क्षेत्रीय एवं पारंपरिक कला के नमूनों का प्रिंटिंग व पेंटिंग द्वारा अनुप्रयोग का अध्ययन किया जा सकता है। कलाकारों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं गोदना शिल्पकारों की समस्याओं पर भी अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. Agrawal, G.; Kothari, V.K.; and Koehl, L. (2009) An intelligent system for supporting design of fashion personalized fabrix products, *Indian Journal of Fibre & Research & Textile Research,* Vol. 34, 258-266.
2. Alam, S; and Kumari, M. (2017) Tribal Heritage Conservation in Jharkhand from and anthropological view point, *Indian Journal of Social Research,* 58(6), 9 (3-924).
3. Apeagyei, P. R. (2005) The Impact of Image on Emerging Consumers of Fashion, *International Journal of Management Cases,* 242-251.
4. Arora, R.; Mathur, R.; and Gupta, V. (2014) Chamba Embroidery: Stitch Analysis of Traditional Technique, *Research Journal of Family,Community and Consumer Science,* 2(7). 1-11.
5. Athistam, J.; and Thilagm, C.(2014) A Study on Development and Evolution of Indian Embroidery in Saris, *Multidisciplinary Research Journal of Collage,* 1(2). 150-156.
6. Devi, S. (2011) Adoptation of Traditional Embroidery Designs for FabricPainting on Jacket, Master's Thesis, CCS Haryana, Agriculture University, Hisar, Haryana.
7. Gupta, M. (2016) भारतीय वस्त्र कला, Rajasthan Hindi Granth Acadamy, Jaipur.
8. Hambly, W.D. (1925) The history of Tattooing and its significance, Dover Publication, Newyork.

——==00==——